Lecture NO.-23.824

Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper- IV
Date:- 24-8-20

Structuralism

Contribution of Titcheners

1898 में टिचेनर ने एक शोध पत्र (Research articles) प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था "दी पोस्चुलेट्स ऑफ स्ट्रक्चरल साइकोलॉजी (The Postulates of Structural Psychology) इस शोध पत्र के साथ संरचनावाद (Structuralism) की औपचारिक संस्थापना (Formal Foundation) होते मानी गयी है। इस संरचनात्मक मनोविज्ञान (Structural Psychology) की मुख्य विशेषताएं निम्नांकित है।

(1) मनोविज्ञान की विषय वस्तु (Subject matter of Psychology)
(2) मनोविज्ञान की विधियां (Methods of Psychology)
(3) चयन के नियम (Principles of Selection)
(4) सम्बन्ध के नियम (Principles of connection)
(5) संवेग (Emotion)
(6) चिन्तन (Thinking)
(7) मन शरीर समस्या (Mind-body Problems)

इन सभी पहलुओं का वर्णन निम्नांकित है।

(1) मनोविज्ञान का विषय-वस्तु (Subject matter of Psychology):- टिचेनर ने यह स्पष्ट किया की सभी विज्ञान का आरंभ बिन्दु अनुभूति (Experience) ही होती है। वे वुण्ट के इस विचार से सहमत नहीं थे।

Scanned with CamScanner

कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) का अध्ययन करता है, तथा भौतिकी मध्यवर्ती अनुभूति (mediate experience) का वास्तव में, वे अनुभूतिक्षेत्र विभाजन से सहमत नहीं थे। टिचेनर के लिए सभी अनुभूतियां तत्कालिक (immediate) थी मनोविज्ञान तथा भौतिकी में इसलिए अन्तर नहीं था की उसका सम्बन्ध अलग अलग विषय से था बल्कि इसलिए था की वे अपने अध्ययनिष्ठ विषय-वस्तु (common subject matter) को भिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन करते थे। मनोविज्ञान अनुभूति का अध्ययन उस व्यक्ति के संदर्भ में करता है जो उस अनुभूति का अध्ययन करता है जबकि भौतिक अनुभूति का अध्ययन बिना किसी व्यक्ति के संदर्भ में ही करता है। दूसरे शब्दों में, भौतिक विज्ञान अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति से स्वतंत्र होकर करता है जबकी मनोवैज्ञानी अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति पर आधारित होकर करता है। यही कारण है कि मनोविज्ञान के विषय वस्तु (subject matter) की औपचारिक परिभाषा (formal definition) देते हुए टिचेनर कहा है कि "अनुभव करने वाला व्यक्ति पर आधारित अनुभूति" (experience dependent upon an experiencing person) ही मनोविज्ञान का विषय वस्तु (subject matter) है।

टिचेनर मन (mind) तथा चेतन (consciousness) के बीच भी अन्तर किया। उनके अनुसार जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के अनुभूतियों के कुल योग को मन कहा गया है जबकि किसी दिए हुए समय में व्यक्ति की अनुभूतियों के कुल योग को चेतन (consciousness) कहा जाता है।

टिचेनर के अनुसार मनोविज्ञान के तीन समस्याएं है। क्या (what), कैसे (how)? और क्यों (why)। क्या से तात्पर्य मानसिक अनुभूति का उसके सरलतम तत्वों में विश्लेषण (analysis) से था "कैसे" से तात्पर्य यह खोज करना था कि मानसिक अनुभूति के तत्व किस तरह से संयोजित (combined)

Scanned with CamScanner

होते हैं। तथा वे कौन कौन से नियम (principles) हैं जिनसे संयोजन (combination) निर्धारित होता है। "क्यों" से तात्पर्य उन तरीकों (ways) से होता है जिसके सहारे मानसिक घटनाएं (mental events) अपनी दैहिक अवस्थाओं (physiological conditions) अर्थात मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र (Nervous system) से सह संबंधित होते हैं।

वुण्ड के ही समान टिचेनर ने भी चेतन के तत्वों का विश्लेषण किया। टिचेनर के अनुसार चेतन के तीन मूलतत्व होते हैं:— संवेदन (Sensation), प्रतिमा भाव या मनोभाव (affection)। वुण्ड प्रतिमा को चेतन का स्वतंत्र तत्व (Independent element) नहीं मानते थे। टिचेनर ने संवेदन को प्रत्यक्षण का एक तत्व माना है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "आउटलाईन ऑफ साइकोलॉजी" (Outline of Psychology) में टिचेनर ने संवेदन के 42,415 प्रकारों का वर्णन किया है। प्रतिमा विचार (ideas) के तत्व (elements) होते हैं और उनके द्वारा उन वस्तुओं का प्रतिनिधित्व होता है जो वास्तव में उपस्थित नहीं होते हैं। टिचेनर ने वुण्ड के "त्रिविमय सिद्धान्त" को स्वीकृत कर दिया वुण्ड द्वारा इस सिद्धांत के तहत प्रतिपादित तीन आयामों अर्थात सुख-दुख, तनाव-शिथिल, उत्तेजन-शांत में टिचेनर के मात्र पहले आयाम को ही स्वीकृत किया और अन्य दो आयामों को संवेदन एवं प्रतिमा के भीतर ही सम्मेलित कर लिया। हेनले (Henle, 1944) के अनुसार बाद में टिचेनर भाव के सुख-दुख आयाम को अस्वीकृत कर दिया क्योंकि टिचेनर के अनुसार भाव का कोई स्वतंत्र गुण नहीं होता है। अपने जीवन के कुछ अंतिम क्षणों में के कुछ वर्षों में उन्होंने अपने सम्प्रदाय (System) को और सख्त बनाते हुए कहा कि संवेदन एवं प्रतिमा के बीच कोई अंतर नहीं है तथा अन्त में उन्होंने संवेदनों को ही प्रबल माना।

टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया की चेतन के तत्वों की अपनी कुछ विशेषताएं

(characteristics) होती हैं। वुण्ट ने ऐसी दो विशेषताओं को महत्वपूर्ण बतलाया था। वे दो विशेषताएं हैं गुण (quality) तथा तीव्रता (intensity)। टिचेनर इन दो विशेषताओं की सूची में दो और विशेषताओं को अर्थात् स्पष्टता (clarity) तथा अवधि (duration) को जोड़ा। साथ-साथ इसके अलावा संवेदन के एक और विशेषता अर्थात विस्तार (extensity) भी देखने को मिलता है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया की संवेदन तथा प्रतिमा में अन्तर करना सामान्यतः संभव नहीं है सभी चारों विशेषताएं (characteristics) होती हैं, परन्तु भाव में स्पष्टता (clarity) की विशेषता को छोड़कर बाकी अन्य तीन विशेषताएं होती हैं। उन्होंने यह भी दावा किया की संवेदन तथा प्रतिमा में अन्तर करना सामान्यतः संभव नहीं है। लेकिन तीव्रता (intensity) की विशेषता के रूप में एक परिमाणात्मक अन्तर (quantitative difference) किया जा सकता है। उन्होंने कहा की तीव्रता के आयाम पर एक ऐसी बिन्दु का निर्धारण किया जा सकता है कि प्रतिमा इतनी अधिक मजबूत हो जाता है कि जिसे संवेदन कहा जाता है या यह संवेदन इतनी कमजोर हो जाता है कि उसे प्रतिमा कहा जा सकता है। टिचेनर उर्जबर्ग स्कूल के प्रतिमारहित चिन्तन के संप्रत्यय को अस्वीकृत कर दिया और यह दावे के साथ कहा की उर्जबर्ग मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस तरह के परिणाम इसलिए पाए गए थे क्योंकि उनके प्रयोज्यों (subjects) के अन्तर्निरिक्षण (introspection) अधूरे एवं दोषपूर्ण था।

इस तरह से यह स्पष्ट हुआ कि टिचेनर चेतन के संपूर्ण संरचना को उनके तत्वों तथा मुख्य विशेषताओं के रूप में उन्हें काफी स्पष्ट किया। इस तरह से वे मनोविज्ञान के प्रथम मुख्य प्रश्न अर्थात 'क्या' (what) का उत्तर दे सकने में समर्थ हुए। Next class

Scanned with CamScanner